ISSN: 2583-5149 | Vol. 3, Issue. 1 | 2023 June | Frequency: Biannual

अभिनवधारा
ABHINAVDHARA
International Journal of Innovation in Indic Studies
www.ijiis-org.com

स्वतंत्र भारत में चित्रकला की दशा और दिशा का एक अध्ययन

Dr. Rakesh Kumar Chaudhary
HoD, Assistant Professor, ASFA,
Amity University Haryana

Received: 18 June 2023 | Accepted: 20 June 2023 | Published: 30 June 2023

सारांश

यह शोध पत्र स्वतंत्र भारत में चित्रकला की परिवर्तनकारी यात्रा पर प्रकाश डालता है, जो स्वतंत्रता के बाद के पुनर्जागरण से लेकर समकालीन युग तक इसके प्रक्षेप पथ का पता लगाता है। पेपर इस बात की पड़ताल करता है कि कैसे कलाकारों ने परंपरा और आधुनिकता के अंतर्संबंधों को पार करते हुए भारतीय कला के लिए एक अलग पहचान बनाई। यह शोध पत्र स्वतंत्र भारत में चित्रकला की दशा और दिशा का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करता है। ऐतिहासिक संदर्भ, कलात्मक आंदोलनों और समकालीन रुझानों की जांच करके, यह देश के सांस्कृतिक और सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य को दर्शाते हुए, भारतीय चित्रकला के गतिशील विकास का अनावरण करना चाहता है।

बीज शब्द भारतीय चित्रकला, स्वतंत्र भारत में चित्रकला, चित्रकला के गतिशील

परिचय

कई प्राचीन सभ्यताओं के प्रभाव के कारण, जिनमें सिंधु घाटी सभ्यता (3300–1300 ईसा पूर्वय परिपक्व काल 2600–1900 ईसा पूर्व), मौर्य (322–187 ईसा पूर्व), गुप्त (तीसरी शताब्दी के मध्य से 543 ईसा पूर्व तक) शामिल हैं। , चोल (600 ईसा पूर्व – 300 सीई), लोधी (1451 सीई से 1526 सीई), मराठा (1674–1818 सीई), और मुगल (1526 सीई–अठारहवीं शताब्दी के मध्य)। हमारी पारंपरिक कला, जो धर्म और भारतीय पौराणिक कथाओं से प्रेरित थी, विभिन्न आकारों और शैलियों में आई, लेकिन इसमें हमेशा भक्तिपूर्ण गुणवत्ता थी, जो दर्शाती है कि यह व्यावसायिक उपयोग के लिए नहीं थी। यह निष्कर्ष निकालना तर्कसंगत है कि मुगल से ब्रिटिश प्रशासन में देश के संक्रमण के परिणामस्वरूप भारत के कला परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया।

स्वतंत्र भारत में चित्रकला की दशा और दिशा में गतिशील परिवर्तन हुए हैं, जो देश के सामाजिक–सांस्कृतिक और राजनीतिक परिदृश्य को दर्शाते हैं। स्वतंत्रता के बाद, भारतीय कला ने औपनिवेशिक विरासत से अधिक विविध और सांस्कृतिक रूप से निहित अभिव्यक्ति की ओर बदलाव का अनुभव किया।

1. **स्वतंत्रता के बाद का पुनर्जागरण (1947–1960)** स्वतंत्रता के तुरंत बाद के वर्षों में भारतीय कला में पुनर्जागरण देखा गया। कलाकारों ने पारंपरिक भारतीय सौंदर्यशास्त्र को आधुनिक तकनीकों के साथ मिश्रित करके एक विशिष्ट पहचान स्थापित करने का प्रयास किया। प्रगतिशील कलाकारों का समूह, जिसमें एम.एफ. जैसे दिग्गज शामिल हैं। हुसैन, एफ.एन. सूजा, और एस.एच. रजा ने इस आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके कार्यों में अक्सर स्वदेशी विषयों को पश्चिमी शैलियों के साथ जोड़ा जाता है।

2–**पहचान का अन्वेषण (1960 और 1980 का दशक**) 1960 और 1970 के दशक में प्रयोगवाद में वृद्धि देखी गई और भारतीय कलाकारों के बीच पहचान की तलाश देखी गई – तैयब मेहता, भूपेन खाखर, और वी–एस– गायतोंडे जैसे कलाकारों ने पौराणिक कथाओं से लेकर सामाजिक तक विविध विषयों की खोज की। मुद्दे– आधुनिकतावाद ने कलाकारों को प्रभावित करना जारी रखा, लेकिन पारंपरिक कला रूपों में भी रुचि बढ़ रही थी, जिससे लघु चित्रकला और लोक कला का पुनरुद्धार हुआ। इसके अलावा उल्लेखनीय तथ्य यह है कि, ब्रिटिश प्रायोजन से स्वतंत्र, बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट की विरासत बुनियादी ढांचे के विकास में निहित है। संग्रहालयों और निजी संग्राहकों ने अंततः बड़ी संख्या में इन कार्यों का अधिग्रहण कर लिया। भारतीय कला के प्रारंभिक आधुनिक दृश्य भाषाविज्ञान के व्याकरण की बंगाल स्कूल ऑफ पेंटिंग द्वारा पुनर्व्याख्या की गई थी। जामिनी रॉय, नंदलाल बोस, के. वेंकटप्पा, समरेंद्रनाथ गुप्ता, असित कुमार हलधर, क्षितींद्रनाथ मजूमदार, सारदा उकील और एम.ए.आर. चुगताई उन उल्लेखनीय समकालीन बंगाली कलाकारों में से कुछ हैं जिन्हें इस आंदोलन ने तैयार किया।

3– **वैश्वीकरण और समकालीन कला (1990 के दशक से आगे)** 1990 के दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के साथ, वैश्विक कला रुझानों के प्रति उत्साह बढ़ गया था – इस अवधि में भारतीय कला में शैलियों और विषयों की एक विविध श्रृंखला देखी गई – युवा कलाकार, जैसे कि सुबोध गुप्ता, भारती खेर, और अतुल डोडिया, को प्रमुखता मिली– विषयों में वैश्वीकरण, शहरीकरण, और बदलते सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य के मुद्दे शामिल किए गए

4. **तकनीकी प्रगति** 21वीं सदी तकनीकी प्रगति लेकर आई जिसने कला के माध्यम और प्रस्तुति को प्रभावित किया। पेंटिंग की पारंपरिक धारणाओं को चुनौती देते हुए डिजिटल कला, इंस्टॉलेशन और मल्टीमीडिया अधिक प्रचलित हो गए।

5. **शैलियों और विषयों की विविधता** समकालीन कला परिदृश्य में, शैलियों और विषयों की उल्लेखनीय विविधता है। कलाकार क्षेत्रीय परंपराओं, पौराणिक कथाओं, वैश्विक मुद्दों और व्यक्तिगत आख्यानों सहित कई स्रोतों से प्रेरणा लेते हैं। यह बहुलवादी दृष्टिकोण भारत के सांस्कृतिक ताने–बाने की जटिलता को दर्शाता है। स्वतंत्र भारत में चित्रकला की स्थिति अलग–अलग चरणों में विकसित हुई है, स्वतंत्रता के बाद के पुनर्जागरण से लेकर वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति वाले समकालीन युग तक। दिशा को परंपरा और आधुनिकता के बीच निरंतर संवाद द्वारा आकार दिया गया है, जिसके परिणामस्वरूप कलात्मक अभिव्यक्ति की समृद्ध सामने आई है।

अध्ययन की पृष्ठभूमि

यह अध्ययन 1940 के दशक में प्रगतिशील कलाकारों के समूह के उद्भव के साथ शुरुआत करते हुए, पश्चिमी आधुनिकतावाद के साथ पारंपरिक भारतीय सौंदर्यशास्त्र के संश्लेषण की जांच करता है, इसके बाद अन्वेषण बाद के दशकों में स्थानांतरित हो जाता है, जिसमें 1960 से 1980 के दशक तक चिह्नित विविध विषयगत अभिव्यक्तियों और प्रयोगों पर प्रकाश डाला जाता है। इस अवधि में कलाकारों के उद्भव के साथ–साथ पारंपरिक कला रूपों का पुनरुद्धार देखा गया। यह पेपर 1990 के दशक में वैश्वीकरण और आर्थिक उदारीकरण के प्रभाव का विश्लेषण करता है, जिसके परिणामस्वरूप समकालीन भारतीय कला में शैलियों और विषयों के विविधीकरण पर प्रकाश डाला गया है। सुबोध गुप्ता, भारती खेर और अतुल डोडिया जैसे युवा कलाकार केंद्र में हैं, जो एक वैश्विक लेकिन जड़ जमाये हुए परिप्रेक्ष्य को दर्शाते हैं। इसके अलावा, शोध 21वीं सदी में डिजिटल कला, इंस्टॉलेशन और मल्टीमीडिया के एकीकरण पर विचार करते हुए कलात्मक अभिव्यक्ति को आकार देने में तकनीकी प्रगति की भूमिका की जांच करता है। अध्ययन शैलियों और विषयों की विविधता पर जोर देता है, एक बहुलवादी दृष्टिकोण का प्रदर्शन करता है जो क्षेत्रीय परंपराओं, पौराणिक कथाओं और वैश्विक मुद्दों से प्रेरणा लेता है।

अनुसन्धान उद्देश्य

इस शोध का बहुमूल्य उद्देश्य स्वतंत्र भारत में चित्रकला की दशा और दिशा का विश्लेषण करना है। ये सभी नीचे उल्लिखित उद्देश्य हैं।

- **कलात्मक शैलियाँ और गतिविधियाँ–** स्वतंत्रता के बाद भारतीय चित्रकला में उभरी विभिन्न कलात्मक शैलियों और आंदोलनों, जैसे कि बंगाल स्कूल, प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप और समकालीन रुझानों का विश्लेषण करना।
- **सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों का प्रभाव–** यह जांचना कि स्वतंत्र भारत में सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों ने भारतीय चित्रकला के विषयों, विषयों और अभिव्यक्तियों को कैसे प्रभावित किया है।

- **संस्थानों और कला विद्यालयों की भूमिका–** चित्रकला की दशा और दिशा को आकार देने में कला संस्थानों और स्कूलों की भूमिका का पता लगाना, जिसमें कलात्मक शिक्षा पर उनका प्रभाव और नई प्रतिभा को बढ़ावा देना शामिल है।
- **बाजार और संरक्षण–** स्वतंत्रता के बाद भारतीय कलाकारों की पसंद और दिशाओं को आकार देने में कला बाजार और संरक्षण की भूमिका का अध्ययन करना।
- **वैश्विक प्रभाव और समसामयिक रुझान–** भारतीय चित्रकला पर वैश्वीकरण के प्रभाव की जांच करना और यह पता लगाना कि समकालीन कलाकारों ने वैश्विक कला प्रवृत्तियों पर कैसे प्रतिक्रिया दी है।

भारतीय कला के परिवर्तन के उदाहरण

भारत की संपन्न कला दुनिया तेजी से बढ़ रही है और भारतीय कला की ताकत केवल बढ़ेगी। इस कठोर और विस्तारित भारतीय समकालीन कला जगत को 10 कलाकारों की सूची में व्यवस्थित करना एक चुनौती है। यह एक मात्र चयन है जो कई स्थापित और उभरते कलाकारों पर केंद्रित है, जिनमें से अधिकांश भारत में स्थित हैं। प्रदर्शन, इंस्टॉलेशन, फोटोग्राफी, पेंटिंग, मूर्तिकला, फैशन और सिरेमिक में काम करते हुए, प्रत्येक कलाकार के पास एक विशिष्ट सौंदर्य शब्दावली होती है, जो समकालीन कला के वैश्विक सिद्धांत में उनकी जगह की पुष्टि करती है।

- **जरीना** (अलीगढ। न्यूयॉर्क में रहता है और काम करती है) जरीना को उम्मीद है कि वह न्यूनतम मोनोक्रोम प्रिंट, कैनवस, अंतरंग चित्र, सुरुचिपूर्ण मूर्तियां और सोने की परत की परतों में पके हुए कागजों के माध्यम से घर की भावना को जगाने और स्थापित करने की उम्मीद करती है।

- **शीला गौड़ा** (भद्रावती। स्विट्जरलैंड और बैंगलोर में रहता है और काम करती है।) भारत के सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन में शारीरिक श्रम की भूमिका और कला के निर्माण में इसकी प्रासंगिकता को संबोधित करते हुए, गौड़ा अपने कार्यों को बनाने के लिए कठिन हाथ श्रम और शिल्प कौशल का उपयोग करते हैं। वह अक्सर अपने लुभावने टुकड़ों के लिए भारत के वंचित और हाशिए पर रहने वाले समूहों से प्रेरणा लेती हैं, जैसे कि बीहोल्ड (2009), जिसे टेट ने 2014 में खरीदा था। कसकर बांधे गए मानव बालों द्वारा बीस ऑटोमोबाइल बंपरों से लटकी हुई चार किमी की गांठदार रस्सी इस कलाकृति को बनाती है। यह धार्मिक अर्थव्यवस्था – जिसमें बाल या तो लाभ के लिए बेचे जाते हैं या तावीज बनाने के लिए मंदिरों को दान कर दिए जाते हैं – और भारत की तीव्र शहरी महत्वाकांक्षाओं के बीच संघर्ष को संबोधित करता है।

- **रीना सैनी कलात** (दिल्ली। मुंबई में रहता है और काम करती है।) नौकरशाही के प्रतीक – रबर कार्यालय की मोहरें और बिजली के तारों में उलझे कंटीले तारों की कतरनें – रीना सैनी कल्लट के काम में बार–बार आते हैं। राज्य के तंत्र पर व्यंग्य करते हुए, उनकी श्रृंखला प्लीकिंग लाइन्सष (2019) जैसे हालिया टुकड़े राष्ट्रीयताओं की रूपरेखा और भौगोलिक सीमाओं की क्षमता और पारगम्यता के साथ खिलवाड़ करते हैं

- **शिल्पा गुप्ता** (मुंबई। मुंबई में रहता है और काम करती है।) शिल्पा गुप्ता की रुचि इस बात में है कि लोग अदृश्य को कैसे देखते हैं, जानकारी कैसे प्राप्त की जाती है और उसका उपयोग कैसे किया जाता है, और इसे कृत्रिम प्रणालियों और श्रेणियों में कैसे आकार दिया जाता है। उनका लक्ष्य वीडियो, प्रदर्शन, संगीत और इंस्टॉलेशन के साथ अपने काम के माध्यम से ज्ञान को मुक्त करना और समय और समुदायों में सूचना प्रवाह को बढ़ावा देना है। उनका दृष्टिकोण दमनकारी अधिकारियों के खि़लाफ है, जो स्थानीय या राज्य–स्तरीय हो सकते हैं।

- **रक्स मीडिया कलेक्टिव** (जीबेश बागची, मोनिका नरूला और शुद्धब्रत सेनगुप्ता) सभी नई दिल्ली में रहते हैं और काम करते हैं। रक्स मीडिया कलेक्टिव, जो दुनिया के प्रमुख संस्थानों में बार–बार आता है, समान रूप से कुशल कलाकार, क्यूरेटर, संपादक और शोधकर्ता हैं। अपनी प्रक्रियाओं में अकादमिक, कलाकारों ने 2000 में सेंटर फॉर द स्टडी में सराय कार्यक्रम और सराय रीडर श्रृंखला की सह–स्थापना की। दिल्ली में विकासशील सोसायटी। कार्यक्रम के शोधकर्ताओं के साथ काम करते हुए, उन्होंने एक अंतःविषय अभ्यास का निर्माण किया है जिसमें मीडिया, फिल्म, मूर्तिकला, किताबें, फोटोग्राफी और दर्शनशास्त्र में व्याख्यान प्रदर्शन, इतिहास की पुनरू परीक्षा और ज्ञान की प्राप्त प्रणालियों की चल रही जांच शामिल है।

- **निखिल चोपड़ा** (कलकत्ता। गोवा में रहता है) और काम करता है। चोपड़ा ने आत्मकथा को लोकप्रिय इतिहास और पुरानी यादों के साथ जोड़ने के लिए योग राज चित्रकार का अवतार अपनाया। इस आवारा और स्टाइलिश शख्सियत ने मुंबई, न्यूयॉर्क और ओस्लो जैसे कई शहरों की यात्रा की है। लंबे कैनवस पर अपने बड़े चारकोल चित्रों में, जो अक्सर तंबू से मिलते जुलते हैं, वह प्रदर्शनात्मक चित्रण के माध्यम से ग्रामीण इलाकों की पहचान, जटिल इतिहास और यादों की खोज करते हैं। चोपड़ा के अन्य काल्पनिक आंकड़े 2009 में 53वें वेनिस बिएननेल, 2018 में चीन के दूसरे यिनचुआन बिएननेल और 2015 में शारजाह बिएनियल 12 में दिखाए गए हैं।

- **ठुकराल और टैगरा जितेन ठुकराल** (पंजाब) और सुमीर टागरा (नई दिल्ली)। दोनों नई दिल्ली में रहते हैं और काम करते हैं। जितेन ठुकराल और सुमीर टैगरा के बीच 15 साल का सहयोग उनकी पॉप शैली में स्पष्ट है, जो अधिक महत्वपूर्ण सामाजिक–आर्थिक मुद्दों को अस्पष्ट करता है। वे प्रवासन, भारत के वैश्वीकरण और देश की पहचान के लिए मौलिक पौराणिक विषयों जैसे विषयों से निपटने के दौरान जानबूझकर कला की परिभाषा को व्यापक बनाते हैं। वे विज्ञापन, फैशन और कला के बीच चतुराई से बदलाव करके ऐसा करते हैं।

- **हिमाली सिंह सोइन** (नई दिल्ली। नई दिल्ली और लंदन में रहता है और काम करती है।) फरीज लंदन में 2019 फरीज आर्टिस्ट अवार्ड जीतने वाली हिमाली सिंह सोइन अपने अभिव्यंजक अभ्यास के लिए प्रसिद्ध हो गई हैं, जो पाठ, प्रदर्शन और वीडियो का मिश्रण है। प्राकृतिक दुनिया और पारिस्थितिकी उनके काम के लिए मौलिक हैं, और मानव हस्तक्षेप और पर्यावरणीय बातचीत की कमियों पर विचार करने के लिए उन्हें अक्सर रूपकों के रूप में लागू किया जाता है।

निष्कर्ष

स्वतंत्र भारत में चित्रकला की दशा और दिशा के परीक्षण से एक गतिशील और बहुआयामी परिदृश्य का पता चलता है जो देश की विविध सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक छवि को प्रतिबिंबित करता है। स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद से भारतीय चित्रकला का विकास परंपरा और आधुनिकता के समृद्ध अंतर्संबंध द्वारा चिह्नित किया गया है, जो आंतरिक और बाहरी दोनों प्रभावों का जवाब देता है। वैश्विक प्रभावों और समकालीन रुझानों ने स्वतंत्र भारत में चित्रकला की दिशा को आकार देने में परिवर्तनकारी भूमिका निभाई है। कलाकार अंतरराष्ट्रीय आंदोलनों से जुड़ते हैं, एक विशिष्ट भारतीय पहचान बनाए रखते हुए वैश्विक कलात्मक संवाद में योगदान देते हैं। आधुनिक माध्यमों और विषयों के साथ पारंपरिक तकनीकों का संलयन एक गतिशील संश्लेषण को दर्शाता है जो स्थानीय और वैश्विक स्तर पर प्रतिध्वनित होता है। कला संस्थान और शिक्षा भारतीय चित्रकला के पथ को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शोध उभरती कलात्मक विरासतों को संरक्षित करने और प्रयोग और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने वाले वातावरण को बढ़ावा देने के लिए इन क्षेत्रों में निरंतर समर्थन और नवाचार की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है। आगे देखने पर, भारत में चित्रकला के भविष्य की संभावनाएँ आशाजनक दिखाई देती हैं। उभरते कलाकार सीमाओं को पार कर रहे हैं, नए माध्यमों की खोज कर रहे हैं और स्थापित मानदंडों को चुनौती दे रहे हैं। चूँकि प्रौद्योगिकी कलात्मक प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहती है, डिजिटल कला का एकीकरण रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए नए रास्ते खोलता है। इस संदर्भ में, शोध सार्वजनिक सहभागिता और सराहना की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है। स्वतंत्र भारत में चित्रकला की निरंतर जीवंतता और प्रासंगिकता सुनिश्चित करने के लिए दृश्य कलाओं के लिए व्यापक सराहना को प्रोत्साहित करना अभिन्न अंग है। स्वतंत्र भारत में

चित्रकला की दशा और दिशा परंपरा और नवीनता, स्थानीय और वैश्विक के बीच निरंतर संवाद द्वारा चिह्नित है, जो एक राष्ट्र की गतिशील भावना को दर्शाता है जो भविष्य की संभावनाओं को गले लगाते हुए अपनी कलात्मक विरासत को संजोता है।

सन्दर्भ

- Gagandeep Kaur, Modern and Contemporary Art in India, Volume 5, Issue 1, January-February 2023, E-ISSN : 2582-2160, International Journal for Multidisciplinary Research
- Bhattacharya S.K. (1966): The Story of Indian Art, Atma Ram & Sons, Delhi.
- Chakraverty Anjan (1996): Indian Miniature Painting, Lustre Press, New Delhi.
- Tarkovsky Andrey (1986): Sculpting in Time, Great Britain.
- Subramanyam, K.G. (1978): Moving Focus, Essays on Indian Art, Lalit Kala Academy,New Delhi.
- Om Parkash (2003): Cultural History of India, New Age International [p] Ltd., New Delhi.
- Mago, Pran Nath (2003): Contemporary Art of India- A Perspective, National Book Trust, India.
- J. Sw aminathan , essay in the catalogue of "Group 1890" inaugural exhibition , Lalit Kala Akademi, New Delhi , 1963.
- Salman Rushdie, " Imaginary Homelands " in Imaginary Homelands : Essays and Criticism 1981-1991, Granta/Viking Penguin , New York, 1991, p. 20
- Cleo Roberts-Komireddi, 10 Indian Artists Who Are Shaping Contemporary Art , Mar 11, 2020 4:22AM, artys.net https://www.artsy.net/article/artsy-editorial-10-indian-artists-shaping-contemporary-art